शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ
(CHIEF FEATURES OR CHARACTERISTICS OF EDUCATION)

भारत पर मुसलमानों के आक्रमणों और तदुपरान्त इस देश में मुस्लिम-शासन की स्थापना के कारण, यहाँ की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली जर्जर होकर अतीत के गर्त में विलीन होने लगी और उसके स्थान पर एक नवीन शिक्षा-प्रणाली का उद्‌भव हुआ। मुसलमानों की यह नवीन शिक्षा-प्रणाली इस देश में लगभग 600 वर्ष तक प्रचलित रही और मकतबों के रूप में इसके अवशेष आज भी यत्र-तत्र दिखाई देते हैं। इस शिक्षा-प्रणाली में कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं, जिन्होंने भयंकर विप्लवों और राजनीतिक संघर्षों के मध्य भी इसको जीवित रखा। हम इन विशेषताओं का निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत वर्णन कर रहे हैं; यथा—

1. व्यावहारिक शिक्षा (Practical Education)—मुस्लिम-शिक्षा केवल शिक्षा के लिए ही नहीं, अपितु व्यावहारिक जीवन के लिए भी थी। परलोक और पुनर्जन्म में विश्वास न करने के कारण मुसलमान—शिक्षा को आध्यात्मिक विकास और मोक्ष-प्राप्ति का साधन नहीं मानते हैं। उनका विश्वास है कि जीवन केवल इसी संसार में है और इसलिए शिक्षा द्वारा व्यक्ति को इस जीवन के लिए तैयार किया जाना चाहिए। अपने इस विचार से प्रेरित होकर, उन्होंने शिक्षा को व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

इस दिशा में औरंगजेब के प्रयास प्रशंसनीय हैं। उसने अपने व्यक्तिगत शिक्षक मुल्ला शाह सलेह की सार्वजनिक रूप में इसलिए निन्दा की, क्योंकि उसने उसको व्यावहारिक शिक्षा

Scanned with CamScanner

नहीं दी थी। औरंगजेब ने राजकुमारों के लिए शाब्दिक और शास्त्रीय शिक्षा की अपेक्षा भूगोल, इतिहास, राजतन्त्र, सैन्य-संचालन और समीपवर्ती राज्यों की भाषाओं की शिक्षा को अधिक उपयोगी बताया। अपनी इसी धारणा के कारण, उसने सामान्य बालकों के पाठ्यक्रमों में भी परिवर्तन करने की आज्ञा दी।

2. निःशुल्क शिक्षा (Free Education)—मकतबों और मदरसों में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था थी। उनमें शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। इन शिक्षा-संस्थाओं के व्यय का सम्पूर्ण भार इनको स्थापित करने और संचालित करने वाले शासकों या धनी व्यक्तियों द्वारा वहन किया जाता था।

मदरसों में निःशुल्क शिक्षा के अलावा निःशुल्क निवास, भोजन और वस्त्रों की भी सुविधा थी। इब्न बतूता ने इस प्रकार के अनेक मदरसों का वर्णन किया है। उनमें से एक मदरसे के विषय में **इब्न बतूता** ने लिखा है—**"यह अति विशाल और भव्य मदरसा है। इसमें छात्रों के रहने के लिए 300 कमरे हैं और छात्रों को दैनिक भोजन और सालाना कपड़ों का खर्च दिया जाता है।"**

3. व्यक्तिगत सम्पर्क (Individual Contact)—प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति के समान मुस्लिम-शिक्षा-पद्धति में भी गुरु और शिष्य का व्यक्तिगत सम्पर्क था। शिक्षक अपने छात्रों के साथ निवास करता था। अतः वह अपने विचारों और आदर्शों से उनको प्रभावित करके, उनकी प्रतिभा, कुशलता और योग्यता की वृद्धि में निरन्तर योग देता था। **टी० एन० सिक्वेरा** के अनुसार—**"शिक्षा को व्यक्तिगत प्रक्रिया माना जाता था। शिक्षक को अपने छात्रों के साथ रहना पड़ता था।"**

"Education was considered a personal process; the teacher had to live with his pupils." —**T. N. Siqueira** : *The Education of India*, p. 18.

4. कक्षा-नायकीय पद्धति (Monitorial System)—मुस्लिम-शिक्षा-संस्थाओं में कक्षा-नायकीय पद्धति का प्रचलन था। इस पद्धति में उच्च कक्षाओं के योग्य छात्र या नायक निम्न कक्षाओं के छात्रों को पढ़ाकर, शिक्षक के अध्यापक-कार्य में सहायता देते थे। मुसलमानों ने इस पद्धति को अपनी सुविधा के लिए प्राचीन भारतीय शिक्षा से ग्रहण किया था।

5. शिक्षक की स्थिति (Status of Teacher)—मुस्लिम युग में शिक्षा के प्रति लौकिक दृष्टिकोण के कारण, शिक्षक की स्थिति में परिवर्तन हो गया था। उसकी स्थिति उतनी उच्च नहीं थी, जितनी कि प्राचीन भारत में थी। सम्राट औरंगजेब ने अपने शिक्षक, मुल्ला शाह सलेह की भेंट करने की प्रार्थना को तीन मास तक ठुकरा कर और अन्त में भेंट करने पर, उसे अज्ञातवास की आज्ञा देकर, शिक्षक के प्रति जिस व्यवहार का प्रमाण दिया, वह उनकी निम्नतर स्थिति का सजीव उदाहरण है।

फिर भी, जैसा कि **डॉ० एफ० ई० केई** ने लिखा है—**"शिक्षकों की सामाजिक स्थिति उच्च थी और वे साधारणतया चरित्रवान् मनुष्य थे, जिनको व्यक्तियों का विश्वास और सम्मान प्राप्त था।"** **जाफर** ने लगभग यही विचार इन शब्दों में अंकित किया है—**"शिक्षकों का समाज में उच्च स्थान था और यद्यपि उनका वेतन अल्प था, तथापि उनको सार्वजनिक सम्मान और विश्वास प्राप्त था।"**

"Teachers occupied a high position in society and though their emoluments were small, they commanded universal respect and confidence."
—**S. M. Jaffer** : *op. cit.*, p. 4.

Scanned with CamScanner

6. गुरु-शिष्य सम्बन्ध (Teacher-Pupil Relationship)—यद्यपि औरंगजेब ने भरे दरबार में अपने गुरु, मुल्ला शाह सलेह का अपमान और अनादर किया था, तथापि इसका अभिप्राय यह नहीं है कि गुरु-भक्ति के प्राचीन आदर्श का पूर्ण लोप हो गया था। अपने पिता को बन्दी बनाने वाले, भाइयों की हत्या करने वाले, राजसिंहासन पर अपना अवैध अधिकार स्थापित करने वाले और अपनी शक्ति एवं श्रेष्ठता के मद से उन्मत्त होने वाले औरंगजेब का अपने गुरु के प्रति दुर्व्यवहार कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उसके अभद्र व्यवहार को केवल अपवाद कहा जा सकता है, क्योंकि सामान्य रूप से समाज में शिक्षक का सम्मान होता था और छात्र उसके प्रति विनम्र एवं भक्तिपूर्ण थे। वे गुरु की सेवा करना और उसकी आज्ञाओं को शिरोधार्य करना अपना परम पुनीत कर्त्तव्य समझते थे। उनका विश्वास था कि गुरु की कृपा से ही उनको सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

शिक्षक भी छात्रों के प्रति स्नेह और पुत्रवत् व्यवहार करता था। जिन मदरसों से छात्रावास संलग्न थे, उनमें शिक्षक और छात्रों का निकट और निरन्तर सम्पर्क रहता था। शिक्षक पग-पग पर उनका पथ-प्रदर्शन करता था। उनके मस्तिष्क को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करता था और प्रशंसा एवं निन्दा का प्रयोग करके उनमें अच्छी आदतों और अच्छे चरित्र का निर्माण करता था।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि गुरु-शिष्य के आदर्श सम्बन्ध की जो श्रेष्ठ परम्परा वैदिक काल में आरम्भ हुई थी, वह मुस्लिम काल में यथावत् बनी रही। **डॉ० एफ० ई० केई** के शब्दों में—**"शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध वैसा ही था, जैसा कि ब्राह्मणीय शिक्षा में था।"**

7. शिक्षा का संरक्षण (Patronage of Education)—यह तथ्य निर्विवाद है कि सम्पूर्ण मुस्लिम काल में शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ। साथ ही यह कथन भी विवादरहित है कि लगभग सभी मुस्लिम शासकों ने मकतबों और मदरसों की स्थापना करके, शिक्षा के प्रति अपने प्रेम और उदारता का परिचय दिया।

उपर्युक्त दोनों धारणाओं की पुष्टि में **डॉ० एफ० ई० केई** का अग्रांकित मत उद्धृत करना असंगत न होगा—**"भारत में मुस्लिम शासकों ने शिक्षा के प्रति सामान्यतः अत्यधिक रुचि प्रदर्शित की और उनमें से अनेक ने अपने राज्य में विभिन्न स्थानों पर मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों का शिलान्यास किया। शासकों के उदाहरण का उनके अनेक प्रभावशाली प्रजाजनों द्वारा अनुकरण किया गया। विद्वानों, कवियों और अन्य साहित्यिक मनुष्यों को राज्य या अमीरों के संरक्षण के कारण बहुधा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। छात्रों को बहुधा शिष्यवृत्तियाँ दी जाती थीं।"**

8. शिक्षा की अनिवार्यता (Indispensability of Education)—मुसलमानों द्वारा शिक्षा को व्यक्ति के जीवन के लिए तीन मुख्य कारकों से अनिवार्य माना जाता है। **पहला,** कुरान शरीफ में ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बताया गया है। **दूसरा,** मुसलमानों द्वारा **मुहम्मद साहब** के इस कथन में विश्वास किया जाता है—"जो छात्र, ज्ञान की खोज करता है, उसे ईश्वर—स्वर्ग में उच्च स्थान प्रदान करता है।" **तीसरा, इस्लाम धर्म** में कहा गया है—**"जो मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है, वह धार्मिक कार्य करता है, जो ज्ञान की बात करता है, वह ईश्वर की प्रशंसा करता है, जो ज्ञान की खोज करता है, वह ईश्वर की उपासना करता है।"**

"He who acquires knowledge, performs an act of piety; who speaks of it, praises the Lord; who seeks it, adores God."

—**Amir Ali** : *Spirit of Islam*, p. 360.

Scanned with CamScanner

इस प्रकार की धार्मिक पृष्ठभूमि में शिक्षा को व्यक्ति के लिए अनिवार्य समझा गया। यही कारण था कि सभी मुस्लिम शासकों और ज्ञान-प्रेमी व्यक्तियों ने मकतबों और मदरसों की स्थापना करके और उनमें निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करके, जनसाधारण के लिए शिक्षा को अधिक-से-अधिक सुलभ बनाने का प्रयत्न किया।

9. सांस्कृतिक एकता की अभिवृद्धि (Promotion of Cultural Unity)—मुस्लिम शासकों के आरम्भ में मकतबों और मदरसों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा केवल मुसलमानों तक ही सीमित थी और उनमें हिन्दुओं के प्रवेश पर प्रतिबन्ध था। सिकन्दर लोदी के समय से यह प्रतिबन्ध हटा दिया गया था। फलस्वरूप, सभी जातियों के हिन्दू—मकतबों और मदरसों में प्रवेश करके, मुसलमानों के साथ शिक्षा ग्रहण करने लगे थे।

इस प्रकार, मुस्लिम शिक्षा-संस्थाओं ने सभी जातियों के हिन्दुओं और मुसलमानों में पारस्परिक सम्पर्क स्थापित किया, जिसके दो सुन्दर परिणाम दृष्टिगोचर हुए—जातीय बन्धनों की समाप्ति और सांस्कृतिक एकता की अभिवृद्धि। **डॉ० एफ० ई० केई** के अनुसार—**"मुस्लिम-शिक्षा ने जाति के बन्धनों को तोड़ने में सहायता दी और भारत की सांस्कृतिक एकता की अभिवृद्धि की।"**

10. भाषा व विज्ञानों को प्रोत्साहन (Encouragement to Language & Sciences)—मुस्लिम युग में फारसी भाषा और विज्ञानों को अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इसका कारण यह था कि फारसी सभी मुस्लिम शासकों की राजभाषा थी। अतः इस भाषा के विद्वानों को राजपदों के लिए बहुत माँग थी। इसी प्रकार, विज्ञानवेत्ताओं की भी माँग थी।

उक्त दोनों माँगों को पूर्ण करने के लिए, मुस्लिम युग में फारसी भाषा और विज्ञानों की शिक्षा का प्रधान लक्ष्य निर्धारित किया गया। **गन्नार मिरडल** का कथन है—**"क्योंकि पदाधिकारियों, प्रशासकों, शिल्पियों और इस प्रकार के अन्य व्यक्तियों की बहुत माँग थी, इसलिए भाषा और विज्ञानों को शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया गया।"**

11. साहित्य व इतिहास का विकास (Development of Literature & History)—मुस्लिम युग में साहित्य और इतिहास का पर्याप्त विकास हुआ। अनेक मुस्लिम शासक, विद्या के प्रेमी और विद्वानों के संरक्षक थे। संरक्षण-प्राप्त विद्वानों का आर्थिक चिन्ता से मुक्त होना और इसके फलस्वरूप उनके द्वारा साहित्य-सृजन के प्रति ध्यान दिया जाना स्वाभाविक था। यही कारण था कि मुस्लिम युग में नीति, दर्शन आदि विषयों पर साहित्य का निर्माण हुआ और रामायण, महाभारत आदि हिन्दू ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद किया गया।

भारत में क्रमबद्ध इतिहास का लेखन सर्वप्रथम मुस्लिम-काल में ही आरम्भ हुआ। इस काल से पूर्व हमें ऐतिहासिक घटनाओं का क्रमिक वर्णन बहुत कम मिलता है। कल्हन की "राजतरंगिनी" को अवश्य इतिहास की कोटि में स्थान दिया जाता है, पर इस प्रकार की किसी अन्य पुस्तक की रचना, मुसलमान शासकों के समय से पूर्व नहीं हुई। इन शासकों में से कुछ ने अपने संस्मरणों और आत्मकथाओं के रूप में इतिहास लिखे एवं अपने दरबारों में इतिहासकारों को संरक्षण प्रदान किया। इन इतिहासकारों में जियाउद्दीन बर्नी का "तारीखे फिरोजशाही", अबुल फजल का "अकबरनामा" और बदायूँनी का "मुन्तखब-उत-तवारीख" इतिहास के बेजोड़ ग्रन्थ हैं।

12. धार्मिक व लौकिक शिक्षा का समन्वय (Synthesis of Religious & Secular Education)—मुस्लिम शिक्षा की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी—धार्मिक और लौकिक शिक्षा का समन्वय। मकतबों में बालकों को कुरान की आयतें कंठस्थ कराई जाती थीं। साथ ही,

Scanned with CamScanner

उनको अंकगणित, बातचीत करने का ढंग, पत्र-लेखन-कला और अर्जीनवीसी आदि जीवनोपयोगी विषयों का अध्ययन कराया जाता था। मदरसों में छात्रों को नियमित रूप से कुरान का अध्ययन करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उनको भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार, शिक्षा के दोनों स्तरों पर धार्मिक और लौकिक विषयों का समावेश था।